BSES

गाजीपुर प्लांट से बिजली के लिए बीएसईएस यमुना का समझौता

कचरे से बनी आधी बिजली खरीदेगी बीएसईएस यमुना

- निर्माणाधीन गाजीपुर पावर प्लांट में कॉमनवेल्थ गेम्स के आसपास उत्पादन शुरू होने की उम्मीद
- करीब 1200 टन ठोस कचरे को प्रतिदिन संशोधित कर बिजली बनाई जाएगी
- बीवाईपीएल को 3. 668 रूपये प्रति केडब्ल्यूएच की दर पर यहां से बिजली मिलेगी

नई दिल्ली, 4 नवंबर, 2009। गाजीपुर पावर प्लांट में कचरे से बनने वाली कुल बिजली का करीब आधा हिस्सा बीएसईएस यमुना खरीदेगी। इस बारे में बीएसईएस यमुना ने ईस्ट दिल्ली वेस्ट प्रॉसेसिंग कंपनी लिमिटेड (ईडीडब्ल्यूपीसीएल) से एक समझौता किया है, जिसके तहत बीएसईएस यमुना को अगले 25 सालों तक इस पावर प्लांट से बिजली मिलती रहेगी। दोनों कंपनियों के बीच हुए समझौते के मुताबिक, यहां उत्पादन होने वाले कुल बिजली का 49 प्रतिशत हिस्सा बीएसईएस यमुना को मिलेगा।

बीवाईपीएल के सीईओ श्री रमेश नारायण ने बताया, "कंपनी ने प्रतियोतितात्मक बोली लगाकर, इस निर्माणाधीन पावर प्लांट से अपने लिए बिजली की खरीद सुनिश्चित की है। बीवाईपीएल को 3. 668 रूपये प्रति केडब्ल्यूएच की दर पर यहां से बिजली मिलेगी। यह प्लांट 10 मेगावॉट बिजली का उत्पादन करेगा, जिसका 49 प्रतिशत हिस्सा बीवाईपीएल को मिलेगा।" समझौते के अनुसार, बाकी बची 51 प्रतिशत बिजली को प्रमोटर्स ओपन एक्सेस मैकेनिज्म के माध्यम से बेच सकते हैं।

गाजीपुर पावर प्लांट न सिर्फ शहर में बड़ी मात्रा में जमा हो रहे ठोस कचरे का निपटान करेगा, बल्कि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बगैर स्वच्छ व प्रदूषण रहित बिजली का उत्पादन भी करेगा। इस प्लांट से मिलने वाली बिजली से कितने घर रौशन होंगे– इस बारे में एक्सपर्ट्स का कहना है कि ढाई किलावॉट लोड वाले 4000 मध्यवर्गीय घरों को यहां से पर्याप्त बिजली मिलेगी।

गाजीपुर पावर प्लांट निर्माणाधीन है और उम्मीद की जा रही है कि कॉमनवेल्थ गेम्स तक यहां बिजली का उत्पादन शुरू हो जाएगा। यह प्रोजेक्ट डायल–सेल्को कंसोर्टियम को दिया गया था। यहां, करीब 1200 टन ठोस कचरे को प्रतिदिन संशोधित कर उससे बिजली बनाई जाएगी। जाहिर है, यह दिल्ली में पर्यावरण प्रदूषण को कम करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

बीवाईपीएल के सीईओ श्री रमेश नारायणन के मुताबिक, पर्यावरण के प्रति सजगता, हमारे सभी कॉरपोरेट सोशल जिम्मेदारियों में हमेशा झलकती है। हम सिर्फ पर्यावरण की बातें ही नहीं करते, इस दिशा में काम करके भी दिखाते हैं। यह समझौता, पर्यावरण के प्रति हमारी सोच व कार्य का नवीनतम उदाहरण है।

गाजीपुर का यह पावर प्लांट ठोस कचरे से बिजली का उत्पादन करेगा। ऐसा ही एक पावर प्लांट ओखला में भी बन रहा है। ये दोनों प्रोजेक्ट मिलकर कुल 26 मेगावॉट बिजली का उत्पादन करेंगे, और कुल 2600 टन ठोस कचरे को निपटाया जाएगा। इससे एमसीडी और अन्य प्रमोटरों को कार्बन केडिट मिलेगा।

पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि कचरे से बनने वाली 10 मेगावाट बिजली से पर्यावरण का उतना फायदा होगा, जितना कि 1.19 लाख पेड़ लगाने से, या एक साल के लिए दिल्ली की सड़कों से 83, 000 कारें हटा लेने से होगा। विकसित देशों में बड़ी मात्रा में कचरे से बिजली बनाई जा रही है। अब दिल्ली भी उन शहरों की फेहरिस्त में शामिल हो गई है। आंकड़ों के मुताबिक, सिर्फ अमेरिका में करीब 400 ऐसे पावर प्लांट हैं, जहां कचरे से बिजली बनाई जा रही है।

दिल्ली की प्रमुख बिजली वितरण कंपनी बीएसईएस अपने उपभोक्ताओं को गुणवत्तायुक्त बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: प्रशान्त दुआ
कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस– 39999870 / 9312007822

चंद्र पी कामत
कॉरपोरेट कम्युनिकेशंस– 39999642 / 9350130304